इकाई ३. प्रसिद्ध ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय

कवि- आचार्य कुन्द-कुन्द

Q- आचार्य कुन्दकुन्द का जीवन परिचय प्रस्तुत करें।

Ans- प्राकृत भाषा के महान विद्वान और सिद्धान्त साहित्य के प्ररूपक के रूप में आचार्य कुन्द-कुन्द का नाम अत्यंत प्रसिद्ध है। अध्यात्म साहित्य के मुख्य प्रणेता होने के कारण प्रत्येक मंगल कार्य के प्रारम्भ में 'मंगलं कुन्द कुन्दार्यो' कहकर उनका स्मरण किया जाता है।

जीवन परिचय → आचार्य कुन्दकुन्द दक्षिण भारत के निवासी थे। इनके पिता का नाम करमण्डु और माता का नाम श्रीमती था। उनका जन्म 'कोण्डकुन्दपुर' नामक स्थान में हुआ था। इस गाँव का दूसरा नाम 'कुरूमरई' भी कहा गया है। यह स्थान पिदथनाडु नामक जिले में है। कहा जाता है कि करमण्डु दम्पति को बहुत दिनों तक कोई सन्तान नहीं हुई। अनन्तर एक तपस्वी ऋषि को दान देने के प्रभाव से पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, जिसका आगे चलकर गाँव के नाम पर कुन्दकुन्द नाम प्रसिद्ध हुआ। बाल्यावस्था से ही कुन्दकुन्द अत्यन्त प्रतिभाशाली थे। अपनी विलक्षण स्मरणशक्ति और कुशाग्र बुद्धि के कारण अल्प समय में ही इन्होंने अनेक ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया। युवावस्था प्राप्त होते ही विरक्त हो श्रमणदीक्षा धारण कर ली।

पंचास्तिकाय के टीकाकार जयसेनाचार्य के टीकाकार ने इनके कुन्दकुन्द, पद्मनन्दी आदि अन्य नामों का उल्लेख किया है। षट्प्राभृत के टीकाकार श्रुत सागरसूरी ने पद्मनन्दी कुन्दकुन्दाचार्य, वक्रग्रीवाचार्य, एलाचार्य और गिद्धपिच्छाचार्य - इन पाँच नामों का निर्देश किया है।

PO A53
/06/19 15:34

काल निर्णय — कुन्दकुन्दाचार्य के काल निर्णय पर अब तक जिन विद्वानों के विचार सामने आये हैं उनमें (1) श्रीयुत नाथूराम प्रेमीजी (2) पं० जुगलकिशोर मुख्तार (3) डा० के० बी० पाठक (4) प्रो० ए० चक्रवर्ती (5) डा० ए० एन० उपाध्ये और पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री (6) यह सभी आचार्य का मत रखा है।

इन सबके बारीकी से मत के अनुसार डा० ए० एन० उपाध्ये ने अपनी प्रवचनसार की प्रस्तावना में इन मतों पर विचार कर निष्कर्ष निकालते हुए लिखा है कि कुन्दकुन्द का समय ई० सन का प्रारम्भ है। परम्परा के अनुसार भी ई० पू० 8 ई० सन 44 तक कुन्दकुन्द का समय माना जाता है। कालक्रम ई० सन की द्वितीय शती के अनन्तर कुन्दकुन्द का काल कभी नहीं माना जा सकता है।

कुन्दकुन्दाचार्य के ग्रन्थ — भगवान महावीर ग्रन्थ का कर्ता गौतम गणधर प्रत्येक ग्रन्थ के टीका साहित्य उपलब्ध है। — कषायपाहुड — आचार्य गुणधर दिगम्बर परम्परा में शौरसेनी प्राकृत में लिखित ग्रन्थ प्रकट है। कषायपाहुड नामक ग्रन्थ की रचना 180 शौरसेनी प्राकृत गाथाओं में की है जो 16000 पद प्रमाण विषय को अपने में समेटे हुए है। इस मूल ग्रन्थ पर 9वीं शताब्दी में आचार्य वीरसेन ने जयधवला नामक विशाल टीका लिखी है। इस पर चूर्णि आदि भी लिखी गयी है।

आचार्य धरसेन धवला टीका — वे गम्भीर विद्वान थे, धरसेन ने शौरसेनी प्राकृत

के प्राचीन ग्रन्थ षट्खण्डागम के विषय का प्रतिपादन अपने शिष्यों पुष्पदन्त और भूतबलि को कराया था। धरसेनाचार्य ने सौराष्ट्र देश की गिरनार की चन्द्र गुफा में रहकर पढ़ाया कहा गया है।

षट्खण्डागम ग्रन्थ में प्राचीन परम्परा से प्राप्त श्रुतज्ञान की प्ररूपणा की गयी है और जैन प्राकृत का यह प्राचीन ग्रन्थ छः खण्डों में विभक्त है जिसमें आत्मतत्व एवं कर्मसिद्धान्त का वर्णन मिलता है।

आचार्य कुन्दकुन्द एवं उनके ग्रन्थ दिगम्बर परम्परा के श्रुतधर आचार्यों में आचार्य कुन्दकुन्द का महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी और जैन प्राकृत रचना और बारह अणुवेक्खा में इनके नाम का उल्लेख मिलता है।

रचना – कुन्दकुन्दाचार्य के प्रमुख ग्रन्थ जो इस प्रकार से हैं।

(1) पंचास्तिकाय (2) प्रवचनसार (3) समयसार (4) नियमसार (5) रयणसार (6) बारह अणुवेक्खा (7) दंसनभक्ति (8) [illegible] टीका षट्खंडागम, आदि सभी कुन्दकुन्दाचार्य के प्रमुख ग्रन्थ हैं।